हार्दिक पटेल की आड़ में संघ का एजेंडा

वाई.के. रज्जन

चमकते हुए गुजरात की कलई एक ही झटके में खुल गई लेकिन उससे भी बड़ा सच जो सामने आया वह दिल दहलाने वाला है। भारत से जिन्हें वाकई प्यार है, वो लोग जैसे.जैसे इस सच की गहराई में जा रहे हैं, हैरान हैं।

गुजरात में तमाम तरह से सत्ता सुख भोग रहे पटेलों ने अचानक ही आरक्षण की मांग कर डाली और साथ ही यह मांग भी कर डाली कि अगर हमें आरक्षण नहीं मिलता है तो किसी को भी नहीं मिलना चाहिए। यानी पहले से जो अनुसूचित जाति और पिछड़ी जातियों का कोटा सिस्टम लागू है वह भी खत्म किया जाना चाहिए।

हम इस विवाद पर अभी बात नहीं करेंगे कि जिन जातियों को यह आरक्षण मिला हुआ है, वह सही है या गलत। यहां हम बात कर रहे हैं कि एक अनजान से युवक हार्दिक पटेल को आगे करके पटेलों को आरक्षण की मांग के आड़ में यह सारा ड्रामा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की प्रयोगशाला में रचा गया। दरअसल, आज से ठीक छह महीने पहले गुजरात में बंदूक लेकर घूमने वाले हार्दिक पटेल को जब धीरे.धीरे गुजरात सरकार ने आगे बढ़ाना शुरू किया तो किसी को उसकी मंशा पर शक नहीं हुआ। अभी 25.26 अगस्त को पूरे गुजरात में जो हिंसा पटेल आरक्षण आंदोलन की आड़ में हुई तब सभी का ध्यान इस हार्दिक पटेल पर गया। कुछ लोगों को इसकी पिछली करतूत मालूम थी और उनके पास इसके फोटो भी थे। उन लोगों ने वह फोटो फेसबुक पर डाल दिए लेकिन तभी भी उसे फर्जी फोटो बताकर खारिज किया गया लेकिन 28 अगस्त को इस हार्दिक पटेल ने जो इंटरव्यू दिया, उससे साबित हो गया कि वो फोटो भी सही थे। एक फोटो में वह प्रवीन तोगड़िया के साथ खड़ा है और उसे सम्मानित कर रहा है। एक फोटो में वह लोकसभा चुनाव के दौरान गुजरात गए अरविंद केजरीवाल का ड्राइवर बना हुआ है।

इंडियन एक्सप्रेस में हार्दिक पटेल का जो इंटरव्यू छपा है, उसमें वह कह रहा है कि उसके आदर्श बाल ठाकरे और सरदार बल्लभभाई पटेल हैं। प्रवीन तोगड़िया को वह हिंदू ह्रदय सम्राट बता रहा है। नरोदा पाटिया नरसंहार के कातिल बाबू भाई बजरंगी को वह अच्छे कार्यों के लिए समर्पित सामाजिक कार्यकर्ता बता रहा है। हाथ में बंदूक लेकर चलने को जायज ठहराते हुए वह कह रहा है कि अगर किसी हिंदू लड़की को कोई मुसलमान छेड़ेगा तो यह बंदूक काम आएगी।

हम इस विवाद पर अभी बात नहीं करेंगे कि जिन जातियों को यह आरक्षण मिला हुआ है, वह सही है या गलत। यहां हम बात कर रहे हैं कि एक अनजान से युवक हार्दिक पटेल को आगे करके पटेलों को आरक्षण की मांग के आड़ में यह सारा ड्रामा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की प्रयोगशाला में रचा गया। दरअसल, आज से ठीक छह महीने पहले गुजरात में बंदूक लेकर घूमने वाले हार्दिक पटेल को जब धीरे.धीरे गुजरात सरकार ने आगे बढ़ाना शुरू किया तो किसी को उसकी मंशा पर शक नहीं हुआ।

इस इंटरव्यू के बाद इस रहस्य से यह पर्दा उठ गया कि पटेल आरक्षण आंदोलन और इसका नेता हार्दिक पटेल आरएसएस की प्रयोगशाला से ही निकले हैं। इसके पीछे नीयत यह है कि संघ सारे आरक्षण को खत्म करवाकर खुद को उच्च जाति के विभिन्न हिंदू समुदायों की पार्टी बनने का सपना देख रही है। हरियाणा में जाट आंदोलन की गहराई में जाने पर जो नाम सामने आ रहे हैं, उसके मूल में संघ और बीजेपी से जुड़े लोगों के चेहरे सामने आ रहे हैं। इसी तरह राजस्थान में फिर से जीवित किए गए गुर्जर आंदोलन को चलाने वाले भी संघ और बीजेपी से जुड़े हुए लोग ही हैं। ऐसे आंदोलनों को चलाने के लिए संघ उन लोगों का इस्तेमाल कर रहा है जो बीजेपी की मुख्यधारा से जुड़े नेता नहीं हैं ताकि सीधी ऊंगली न उठाई जा सके। हरियाणा और राजस्थान की बीजेपी सरकारों ने अपने यहां जाट और गुर्जर आंदोलनों को दबाने की बजाय उनके नेताओं को इज्जत देकर उनका सम्मान बढ़ाया जा रहा है, दोनों राज्यों के मुख्यमंत्री इन आंदोलनों को चलाने वालों के काम भी कर रहे हैं ताकि इनके अपने समुदाय पर उनकी पकड़ को मजबूत किया जा सके।

संघ शुरू से इस लाइन पर काम करता रहा है कि वह ब्राह्मणवादी वर्चस्व की राजनीति को भारत में स्थापित करे। लेकिन दलितों और कुछ पिछड़ी जातियों को मिल रहा आरक्षण खत्म किए बिना यह संभव नहीं है। इसके लिए लोहे को लोहे से काटने की योजना संघ ने तैयार की। यानी तमाम राज्यों में विभिन्न जातियों से आरक्षण की मांग उठवा दी जाए और साथ में यह भी मांग रखी जाए कि अगर हमें आरक्षण नहीं तो फिर किसी को भी नहीं। .....ऐसे आंदोलनों की आड़ में अगर हिंसा भी होती है या पूरा भारत जल उठता है तो भी चिंता नहीं क्योंकि ऐसी हिंसा में तो हमेशा गरीब.गुरबा मरते हैं, मजदूर और मजबूर लोग मरते हैं। धनपशु और रसूखदारों तक इस हिंसा की आग कभी नहीं पहुंचती।

वापस पटेल आंदोलन पर लौटते हैं। गुजरात की मुख्यमंत्री पटेल है, गुजरात बीजेपी का अध्यक्ष पटेल है। गुजरात में 11 मंत्री पटेल हैं, तमाम बड़े आईएएस अफसर पटेल हैं.....हीरे के बिजनेस पर पटेलों का कब्जा है। अमेरिका.इंग्लैंड में पटेल होटल के धंधे में छाए हुए हैं। वहां से संघ के इशारे पर इस आंदोलन के लिए फंडिंग भी की जा रही है। फिर ये पटेल आंदोलन के नाम पर किसको उल्लू बनाया जा रहा है। देखिए एक तरफ तो हार्दिक पटेल ने गुजरात में संघ का यह आंदोलन छेड़ा हुआ है, दूसरी यह शख्स 28 अगस्त को दिल्ली पहुंचता है। आखिर इसे दिल्ली आने की जरूरत क्यों पड़ी....वजह साफ है, मीडिया कवरेज। जितनी ज्यादा मीडिया कवरेज होगी, हार्दिक पटेल उतना बड़ा नेता बनता जाएगा। और हुआ भी यही.....टीवी वाले कुत्तों की तरह हार्दिक पटेल का इंटरव्यू लेने के लिए टूट पड़े.....संघ मुख्यालय में बैठे रणनीतिकार इस योजना पर मंद.मंद मुस्कुरा रहे हैं। गुजरात में जो 10 निर्दोष गरीब लोग मारे गए और 4000 करोड़ की संपत्ति का नुकसान हुआए वह इस देशभक्ति के सामने कुछ भी तो नहीं है।

मेट्रो की तारीख के नाम पर भद्दा मजाक

वाई.के. रज्जन

फरीदाबाद की मेट्रो 6 सितंबर से शुरू होने वाली है लेकिन उसके पहले उदघाटन के नाम पर जो नाटक किया गया वह हरियाणा और केंद्र में बैठी बीजेपी सरकार के मानसिक दिवालिएपन को दर्शाती है। एक महीने से तमाम मेट्रो स्टेशन तैयार पड़े हैं, 20 दिन पहले मेट्रो के सेफ्टी कमिश्नर ने अनापत्ति प्रमाणपत्र भी जारी कर दिया इसके बावजूद मेट्रो के उदघाटन को लेकर मजाक चलता रहा। पहले बताया गया कि 15 अगस्त के मौके पर मुख्यमंत्री मनोहरलाल खट्टर इसका उद्घाटन करेंगे। फिर यह तारीख बदलकर 21 और 23 अगस्त हुई, फिर बदलकर 30 अगस्त हुई, इससे पहले कि फरीदाबाद के लोग इसकी मांग को लेकर सड़कों पर आ जाएं मेट्रो ने तब घोषणा की कि प्रधानमंत्री 6 सितंबर को इसका उद्घाटन करने आएंगे। यदि यही तारीख एक माह और बढ़ा दी जाये तो तमाम भाजपा को वो जूते पड़े कि नानी याद आ जाये।

इन तारीखों की आड़ में बीजेपी के छुटभैये नेता मीडिया को जानकारी देने के नाम पर अपनी रोटियां सेकते रहे। मोदी के केंद्रीय कैबिनेट में शामिल खुद कृष्णपाल गुर्जर को नहीं मालूम था कि प्रधानमंत्री इसका उदघाटन करने वाले हैं और न ही उससे प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) ने इस बारे में कोई सलाह ही मांगी। आमतौर पर पीएम ऐसा करते हैं। लेकिन मोदी तो सबसे ऊपर है न। हुआ यह था कि मुख्यमंत्री खट्टर अमेरिका और कनाडा की यात्रा पर जाने से पहले मोदी से मिला और फरीदाबाद मेट्रो का उद्घाटन करने का अनुरोध किया। देश का जो प्रधानमंत्री म्यूनिस्पैलिटी का चुनाव जीतने पर अपनी पीठ ठोंकता हो, वह फौरन इसके लिए तैयार हो गया। फरीदाबाद की मेट्रो को लाने का श्रेय पिछली सरकार को जाता है, जिसकी कमान भूपेंद्र सिंह हुड्डा के पास थी लेकिन मात्र श्रेय लेने के लिए मोदी और खट्टर ने यह सारा जाल बुना। लेकिन क्या फरीदाबाद के लोग इतने बेवकूफ हैं कि वो मेट्रो लाने का श्रेय मोदी और खट्टर को दे देंगे!

मेट्रो की तारीख के ड्रामे से मेट्रो को रोजाना लाखों का नुकसान हो रहा है। 6 सितंबर तक मेट्रो को कम से कम 8 करोड़ रुपये का नुकसान हो चुका होगा। देखिए, सोचिए कि प्रधानमंत्री से टाइम लेने के लिए बीजेपी वाले जनता के पैसे की कोई परवाह नहीं करते। इसे देशभक्ति कहें या देशद्रोह ?

मोदी 6 सितंबर को आएंगे। अभी से जान लीजिए दो बातें उनके भाषण में होंगी। मेट्रो तो होगी लेकिन वह फरीदाबाद को स्मार्ट सिटी बनाने का भी जिक्र करेंगे.....लेकिन क्या आप लोगों में इतनी हिम्मत है कि आप पूछ सकें कि जिस शहर की सड़कें टूट फूटकर बर्बाद हो चुकी हैं, सीवर का गंदा पानी सड़कों पर बह रहा है, वहां स्मार्ट सिटी की घोषणा मात्र से क्या फरीदाबाद सुधर जाएगा। यह इस शहर की विडंबना है कि शहर के लोग मदहोश हैं, उन्हें अपनी तकलीफों का ज्ञान तो है लेकिन उससे सरोकार नहीं है। रोजाना टूटी सड़कों और गड्ढों के कारण फरीदाबाद में जगह.जगह सड़क हादसे हो रहे हैं, लोग मर रहे हैं, लेकिन कोई माई का लाल किसी पुलिस थाने में इन मौतों या घायलों के लिए खट्टर या मोदी के खिलाफ एफआईआर कराने नहीं जाता। अगर उनके खिलाफ नहीं दर्ज करा सकते तो कम से कम फरीदाबाद नगर निगम के अफसर, पीडब्ल्यूडी के अफसर तो दूर नहीं हैं, डीसी दूर नहीं है, जिसके कान पर जूं तक नहीं रेंगती कि वह सड़कों की खराब हालत के लिए सरकार से कहे, इन लोगों के खिलाफ तो एफआईआर दर्ज कराई जा सकती है लेकिन मदहोश शहर को यह होश कहां.....

अभी एक घटना से मुझे बहुत शर्म महसूस हुई। केंद्रीय मंत्री कृष्णपाल गुर्जर सेक्टर 28 के सरकारी स्कूल में किसी कार्यक्रम में आया हुआ था, मैं सेक्टर 28 की मार्केट में एक दुकान पर कुछ पूछने के लिए गया। साथ ही मैंने उस दुकानदार से कहा, भाई साहब आप मंत्री जी के कार्यक्रम में नहीं गए, सामने ही तो हो रहा है। उस दुकानदार ने भद्दी सी गाली देते हुए कहा कि भाई साहबए जो नेता, जो मंत्री अपने मुहल्ले की सड़क न बनवा सके, वह काहे का मंत्री और मैं उसके कार्यक्रम में क्यों जाऊं। ये फर्जी अच्छे दिन लाने वाले लोग अब काले दिन लेकर आ गए हैं। उस दुकानदार ने कहा कि ये पूरा इलाका कृष्णपाल गूर्जर का है यानी उसकी अपनी कोठी यहीं पर है लेकिन इस सेक्टर 28 की एक भी सड़क साबूत नहीं बची है। ऐसे मंत्री के हम क्यों तलवे चाटें जो अपने इलाके का भी ख्याल नहीं रख सके। मैंने कहा मोदी को एक ज्ञापन ही भिजवा दो सेक्टर 28 मार्केट की तरफ से सड़कों के लिए.....उसने कहा कि भाई साहब 4 साल बाद सारा ज्ञापन रसीद के साथ मोदी को भेज देंगे। चिंता मत करो।

लेकिन उस दुकानदार की इन बातों से बीजेपी और मोदी पर बहुत फर्क नहीं पड़ने वाला। 6 सितंबर को सेक्टर 12 में मोदी की रैली भी है, वहां के खाली मैदान को भरने के लिए तमाम अफसरों, मंत्रियों ने जिम्मेदारी संभाल ली है। उस रैली के बाद बीजेपी नेता फिर कहेंगे हम तो 2019 में भी जीतेंगे। मदहोश, फरीदाबादियो कहां हो तुम....जागो। अपने हक के लिए कब लड़ना सीखोगे.....कब तक बीजेपी.कांग्रेसी नेताओं के तलवे चाटोगे.....मजदूरों, कर्मचारियों के साथ गोलबंदी करके अपना हक लेने का वक्त आ रहा है.....

तुर्की-ब-तुर्की / मियां की जूती मियां के सिर

''मेरी सभी भाइयों और बहनों से विनती है कि उन्हें हिंसा का मार्ग नहीं अपनाना चाहिये। महात्मा गांधी और सरदार पटेल की धरती पर जिस तरह हिंसा का आश्रय लिया जा रहा है हम जानते हैं कि हिंसा से किसी का भला नहीं होता।'' (गुजरात में शक्तिशाली पटैलों के आरक्षण आन्दोलन को लेकर भड़की व्यापक हिंसा के संदर्भ में मोदी की अपील)

हमारा कहना है-

0 मोदी जी शान्ति और सद्भाव की ये बातें, गांधी और सरदार पटेल का नाम, आपको 2002 में भी याद आता तो गुजरात और हिन्दुस्तान के लिये कितना अच्छा होता। तब आपके साम्प्रदायिक उन्माद भड़काने में न केवल सक्रिय भूमिका निभाई बल्कि सरकारी मशीनरी के संरक्षण में हत्यारे गिरोहों को प्रोत्साहित भी किया। उस दौरान 3000 लोग मारे गये थे और लाखों बेघर-बार हो गये थे। तब गुजरात में राज भी आपका ही सीधा था। आज आपके मुंह से शान्ति की अपील एक घिसा-पिटा जुमला ही लगती है।

0 कौन नहीं जानता कि मोदी जी आपको और आपकी भाजपा को आज के दिन देश में एक साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण की दरकार है। इससे बिहार चुनाव जीतने की संघी रणनीति को बल मिलता है। पर गुजरात की हिंसा ने तो जातिगत ध्रुवीकरण का रास्ता खोल दिया है। बिहार में इसका सीधा फ़ायदा नितीश-लालू गठबंधन को मिलने जा रहा है। मोदी जी आप जैसों की वास्तविक चिन्ता यही है। क्या करें ये सवाल तो खड़े होने ही हैं।

0 मोदी जी क्या आप इतनी जल्दी भूल गये कि आपने विकास और भ्रष्टाचार उन्मूलन के नाम पर प्रधानमंत्री की कुर्सी पाई है। आम जनता के लिये विकास का एक बड़ा मतलब था रोजगार के नये अवसरों की उपलब्धता। इसी तरह भ्रष्टाचार उन्मूलन का एक मतलब यह भी था कि नौकरियां न बिकें। लेकिन आपके राज में पूंजीशाहों और नौकरशाहों का बोलबाला है और आपके मुख्यमंत्री और मंत्री कांग्रेसियों से भी बढ़कर भ्रष्टाचार में लिप्त हो गये। लिहाज़ा, एक और रोज़गार नहीं मिल रहे तो दूसरी ओर व्यापमं जैसे घोटाले सामने आ रहे हैं। ऐसे में हताश नौजवान आरक्षण न मांगे तो क्या करें ?

0 मोदी जी जल्द ही आपको भी समझना पड़ेगा कि देश जुमलों से नहीं चलता। लोग आपके आश्वासनों से पक चुके हैं। जिन नौजवानों को आपने सब्ज़ बाग दिखलाकर बरगलाया था वे रोज़गार मांग रहे हैं। उनका आक्रोश ओर उनकी हिंसा दोनों को समझने की जरूरत है। सवाल है कि क्या आप जैसे साम्प्रदायिक मानसिकता और संघी घृणा से भरी विचारधारा वाले व्यक्ति में वास्तविक देशप्रेम की समझ है भी या नहीं ? क्योंकि बिना इस तरह की व्यापक समझ के देश तबाही की तरफ़ ही बढ सकता है। जो आपने बोया है वही तो आज काटोगे। मियां की जूती मियां के सिर इसी को तो कहते हैं।